कालभैरवाष्टकम्

कालभैरवाष्टकम्
देवराज-सेव्यमान-पावनांघ्रि-पांकजां
व्यालयज्ञ-सूत्रममांदु-शेखरां कृपाकरम् ।
नारदादद-योगिबृांद-वांददतां ददिांबरां
कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 1 ॥

भानुकोदि-भास्वरां भवब्धितारकां परां
नीलकांठ-मीब्ससतािध-दायकां त्रत्रलोचनम् ।
कालकाल-मांबुजाक्ष-मक्षशूल-मक्षरां
कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 2 ॥

शूलिांक-पाशदांड-पाणिमादद-कारिां
श्यामकाय-माददेव-मक्षरां घ्रनरामयम् ।
भीमववक्रमां प्रभुां ववगचत्र तांडव वप्रयां
कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 3 ॥

भुब्तत-मुब्तत-दायकां प्रशस्तचारु-ववग्रहां
भततवत्सलां ब्स्थरां समस्तलोक-ववग्रहम् ।
घ्रनतविन्-मनोज्ञ-हेम-ककांकिकी-लसत्कदिां
कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 4 ॥

िमधसेतु-पालकां त्विमधमािध नाशकां
कमधपाश-मोचकां सुशमध-दायकां ववभुम् ।
स्विधविध-केशपाश-शोमभतांि-मांडलां
कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 5 ॥

रत्न-पादुका-प्रभामभराम-पादयुग्मकां
घ्रनत्य-मद्ववतीय-ममष्ि-दैवतां घ्रनरांजनम् ।

मृत्युदपध-नाशनां करालदांष्र-मोक्षिां
कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 6 ॥

अट्िहास-मभन्न-पद्मजांडकोश-सांतघ्रतां
दृब्ष्िपात-नष्िपाप-जालमुग्र-शासनम् ।
अष्िमसद्धि-दायकां कपालमामलका-िरां
कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 7 ॥

भूतसांघ-नायकां ववशालकीघ्रतध-दायकां
कामशवामस-लोक-पुण्यपाप-शोिकां ववभुम् ।
नीघ्रतमािध-कोववदां पुरातनां जित्पघ्रतां

कामशकापुरागिनाथ कालभैरवां भजे ॥ 8 ॥

कालभैरवाष्िकां पठांघ्रत ये मनोहरां
ज्ञानमुब्तत-सािकां ववगचत्र-पुण्य-विधनम् ।
शोकमोह-लोभदैन्य-कोपताप-नाशनां
ते प्रयांघ्रत कालभैरवांघ्रि-सब्ननगिां ध्रुवम् ॥